International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 4 January – February - 2026

भारत के शैक्षिक विकास में संसाधनों की भूमिका

प्रो. डॉ. सरोज पाटील

श्री शहाजी छत्रपति महाविद्यालय, कोल्हापुर.

Corresponding Author – प्रो. डॉ. सरोज पाटील

DOI - 10.5281/zenodo.18491002

सार (Abstract):

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का मूल आधार है। शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि शैक्षिक प्रक्रिया में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग किस प्रकार किया जा रहा है। शिक्षा के विकास में मानव, भौतिक, वित्तीय, तकनीकी संसाधनों की भूमिका बडी महत्वपूर्ण होती है। योग्य शिक्षक, पर्याप्त भौतिक सुविधाएं, पर्याप्त वित्तीय निवेश तथा आधुनिक तकनीकी संसाधन शिक्षा को प्रभावी, सुलभ, समावेशी बनाने में सहायक होते हैं। साथ ही संसाधनों के असमान वितरण, वित्तीय सीमाएं, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी एवं तकनीकी साक्षरता के अभाव जैसी चुनौतियां शिक्षा के विकास में बाधा बन सकती है। भारत जैसे विकसनशील देश में इन चुनौतियों पर काम करना अत्यंत आवश्यक है। अतः इन चुनौतियों पर संतुलित संसाधन वितरण, शिक्षक प्रशिक्षण, डिजिटल सशक्तिकरण एवं नीति-स्तरीय सुधारों की आवश्यकता पर बल आदि उपाय किए जाने चाहिए | अतः संसाधनों का योजनाबद्ध एवं कुशल उपयोग शिक्षा के सतत विकास एवं राष्ट्रीय प्रगति के लिए आवश्यक है।

मुख्य शब्द (Keywords): शिक्षा , संसाधन, मानव संसाधन, तकनीकी संसाधन, शैक्षिक विकास

प्रस्तावना:

किसी भी देश की वास्तविक शक्ति उसके प्राकृतिक संसाधनों से अधिक उसके मानव संसाधनों में निहित होती है। मानव संसाधन में देश की श्रम शक्ति, प्रतिभा, बौद्धिक क्षमता और कार्यकुशलता सम्मिलित होती है। वर्तमान वैश्विक युग में शिक्षा और मानव संसाधन के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित हो चुका है।

विश्लेषण:

शिक्षा का अर्थ एवं स्वरूप:

शिक्षा मानव जीवन की वह निरंतर प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति के ज्ञान कौशल, व्यवहार, चरित्र एवं व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है बल्कि यह व्यक्ति को सामाजिक, नैतिक, बौद्धिक और व्यावहारिक रूप से सक्षम बनाती है।

अतः शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करती है | शिक्षा का स्वरूप व्यापक, गतिशील और जीवनोपयोगी है | शिक्षा निरंतर प्रक्रिया है | जन्म से लेकर मृत्यु तक चलनेवाली प्रक्रिया है | मनुष्य जीवन के प्रत्येक अनुभव से कुछ न कुछ सीखता है |

शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर बल देती है |

अत: शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सहयोगी बनती है|

शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया है | वह समाज की आवश्यकताओं के अनुसार व्यक्ति को ढालती और सामाजिक मूल्यों का संचार करती है | शिक्षा गतिशील प्रक्रिया है | वह समाज, समय और परिस्थितीयों के अनुसार बदलती रहती है | शिक्षा निश्चित उद्देशों की पूर्ती के लिए दी जाती है | जैसे ज्ञान अर्जन, चरित्र निर्माण, कौशल विकास आदि | मनुष्य औपचारिक एवं गैर औपचारिक आदि माध्यमों से शिक्षा प्राप्त कर आत्मनिर्भर और रोजगार योग्य बनने का प्रयास करता है | अत: शिक्षा का अर्थ केवल जानकारी देना नहीं है बल्की व्यक्ति के व्यक्तित्व को संवारना है | शिक्षा का स्वरूप जिम्मेदार नागरिक और सक्षम मानव संसाधन के रूप में विकसित करता है |

बौद्धिक विकास, नैतिक और सामाजिक विकास, व्यावसायिक एवं कौशल विकास, व्यक्तित्व विकास आदि शिक्षा के आयाम है | इन आयामों पर आधारित शिक्षा मनुष्य विकास में बडा योगदान देता है |

शैक्षिक विकास में संसाधनों की भूमिका :

शिक्षा ग्रहण निरंतर प्रक्रिया है | शिक्षा को प्रभावी बनाने में विभिन्न संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है |

भारत में शिक्षा का विकास विभिन्न प्रकार के संसाधनों पर निर्भर है | ये संसाधन शिक्षा की गुणवत्ता, पहुंच और समानता को सुनिश्चित करते हैं | प्रमुख रूप से संसाधनों की भूमिका इसप्रकार है,

मानव संसाधन:

मानव संसाधन से आशय ज्ञान, कौशल, क्षमता और कार्यकुशलता से है जो किसी देश से विकास में योगदान देते हैं | शिक्षा मानव संसाधन के निर्माण, विकास और सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण साधन है | मानव संसाधन वे व्यक्ति है जो अपनी बौद्धिक, शारीरिक और तकनीकी क्षमताओं के माध्यम से समाज और राष्ट्र के विकास में भूमिका निभाते हैं |

मानव संसाधन निर्माण में शिक्षा की भूमिका बडी महत्वपूर्ण होती है | मानव संसाधन निर्माण का मूल उद्देश्य व्यक्ति की बौद्धिक, व्यावहारिक और नैतिक क्षमताओं का विकास करना है | इस प्रक्रिया में शिक्षा ज्ञान के विस्तार का सशक्त माध्यम है | शिक्षा व्यक्ति को बौद्धिक ज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टिकोन और तर्कशीलता प्रदान करती है, जिससे उसकी समझ और निर्णय क्षमता बढती है | इस संदर्भ में अरस्तू कहते हैं, "शिक्षा का उद्देश्य मस्तिष्क को खाली पात्र की तरह भरना नहीं बल्की उसमें सोचने की क्षमता विकसित करना है |" (पृ.133 – politics) अरस्तू के अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य के बौद्धिक विकास द्वारा उसे समाज के लिए उपयोगी बनाना है, जो मानव संसाधन निर्माण का मूल आधार है |

शिक्षा व्यक्ति में प्रश्न करने, प्रमाण खोजने और तर्क के आधार पर निष्कर्ष निकालने की क्षमता विकसित करनी है | इससे अंधविश्वास और रूढीयां कम होती हैं | समाज आधुनिक विचारों के अनुसार आगे चलने के लिए प्रेरित बनता है | अत: शिक्षा के माध्यम से विकसित वैज्ञानिक दृष्टिकोन मानव संसाधन को प्रगतिशील बनाता है | समाज में विवेकशीलता स्थापित होने में मदत मिलती है |

आधुनिक शिक्षा व्यक्ति को नवीन खोजों, सूचना तकनीक, डिजिटल ज्ञान और वैश्विक परिवर्तन से परिचित कराती है | इससे मानव संसाधन समयानुकूल प्रासंगिक और नविनतम बनता है | जैसे आई टी शिक्षा प्राप्त व्यक्ति केवल सोफ्टवेअर डेवलपर बनकर स्वयं भी रोजगार पाता है और दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर निर्माण करता है | इस संदर्भ में फ्रांसिस बेकन कहते हैं, "knowledge itself is

power" (पृ.159 , Meditational Sacrae) बेफन के अनुसार ज्ञान से ही मानव संसाधन शक्तिशाली और प्रभावी बनता है | मनुष्य जीवन समविषम घटनाओं, प्रसंगों से युक्त होता है | शिक्षा व्यक्ति को जीवन की समस्याओं को समझने और समाधान खोजने की क्षमता देती है | ज्ञान का विस्तार, व्यक्ति की समस्याओं का विश्लेषण करना, रचनात्मक समाधान खोजना आदि का विकास कर मानव संसाधन को रचनात्मक और उत्पादक बनाती है |

मनुष्य मूलत: सामाजिक प्राणी है | समाज के बिना मनुष्य का अस्तित्व अधूरा है | अत: शिक्षा व्यक्ति को समाज, संस्कृति, संविधान एवं नैतिक मूल्यों का ज्ञान कराती है | जिससे सामाजिक रूप से उत्तरदायी मानव संसाधन का निर्माण हो पाता है | शिक्षा, नैतिकता, सामाजिक उत्तर दायित्व और आत्मबोध विकसित करती है | शिक्षा व्यक्ति को समाज, संस्कृति, संविधान, अधिकारों और कर्तव्यों का ज्ञान कराती है जिससे मनुष्य जिम्मेदार नागरिक बनता है |

अत: शिक्षा ज्ञान का विस्तार कर मानव संसाधन को बौद्धिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और सामाजिक रूप से समृद्ध बनाती है। शिक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान ही मनुष्य को कुशल, सक्षम और राष्ट्र निर्माण में सहभागी मानव संसाधन बनाता है। "शिक्षा की सफलता का प्रमुख आधार प्रशिक्षित एवं प्रेरित शिक्षक होता है |"(पृ.98 – शिक्षा मनोविज्ञान) प्रशिक्षित शिक्षक, प्रधानाचार्य, शिक्षाविद, प्रशासनिक कर्मचारी शिक्षा की रीढ़ है। कुशल शिक्षक विदयार्थियों के बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक विकास में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

भौतिक संसाधन:

भौतिक संसाधन के अंतर्गत अंतर्भूत विद्यालय, भवन, कक्षाएं, फर्नीचर, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएं, खेल मैदान आदि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक है।

भौतिक संसाधन वे साधन हैं जो शिक्षा की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से संचलित और सुदृढ बनाते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए भौतिक संसाधनों की उपलब्धता अत्यंत आवश्यक है। "उपयुक्त भौतिक वातावरण के अभाव में प्रभावी शिक्षण संभव नहीं है |" (पृ.156 – शिक्षा के आधार) उपयुक्त भौतिक संसाधन शिक्षा को अधिक प्रासंगिक एवं सुदृढ बनाते हैं | विद्यालय, भवन, कक्षाएं, फर्निचर, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएं, शैक्षिक उपकरण, खेल एवं सह पाठ्य सुविधाएं, स्वच्छता एवं आधारभूत सुविधाएं आदि भौतिक संसाधन शैक्षिक प्रक्रिया को अधिक सक्षम बनाते हैं। सुरक्षित, स्वच्छ भवन, सीखने के लिए अनुकुल वातावरण निर्माण करते हैं। उचित रोशनी, वेंटिलेशन, डेस्क, बेंच विद्यार्थियों की एकाग्रता बढाते हैं पुस्तकों, पत्रिकाओं और संदर्भ सामग्री से ज्ञान का विस्तार होता है। चार्ट, मॉडल, ऑडियो-विजुअल लैब, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि सामग्री से आधुनिक शिक्षा संभव है। अतः भौतिक संसाधन शिक्षण अधिगम की बुनियादी संरचना प्रदान करते है।

वित्तीय संसाधन:

वित्तीय संसाधन शिक्षा के विस्तार और सुधार के लिए आवश्यक है। वित्तीय से आशय उन धन राशियों से है जिनका उपयोग विद्यालयों, महाविद्यलयों और विश्वविदयालयों के संचलन, विकास और सुधार के लिए किया जाता है। वित्तीय संसाधन शिक्षा व्यवस्था की मजबूती और विकास का आधार होते हैं। भारत जैसे विकसनशील देश में शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर वित्तीय संसाधनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें सरकारी बजट, अनुदान, शुल्क, दान, छात्रवृत्तियां तथा निजी निवेश शामिल होते हैं। शैक्षिक संस्थाओं, कक्षाओं, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय, छात्रावास आदि के निर्माण में धन की आवश्यकता होती है।

उच्च शिक्षा और शोध संस्थानों के विकास में वित्तीय संसाधन निर्णायक होते हैं।

योग्य शिक्षकों की भर्ती, उनके वेतन, नियमित प्रशिक्षण के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता होती है। इससे शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार होता है। छात्रवृत्तियां, निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें, मध्यान भोजन, छात्रावास, परिवहन सुविधाएं, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों तक शिक्षा पहुंचाने में सहायक होती हैं। उच्च शिक्षा में शोध परियोजनाएं, प्रयोगशालाएं, फेलोशिप और नवाचार केंद्र वित्तीय सहायता से ही संभव होते हैं, जिससे ज्ञान का विस्तार होता है। सरकारी योजनाएं और नीतिगत बदलावों का क्रियान्वयन वित्तीय संसाधनों पर निर्भर करता है। डिजीटल शिक्षा, ऑनलाईन प्लॅटफॉर्म, ई-लर्निंग और आईसीटी का विस्तार पर्याप्त वित्तीय निवेश से ही संभव है। अतः वित्तीय संसाधन शिक्षा के विकास की रीढ़ है। पर्याप्त, निरंतर और न्यायसंगत वित्तीय निवेश से ही शिक्षा की पहुंच गुणवत्ता और समानता सुनिश्चित की जा सकती है। जो राष्ट्र के समग्र विकास को गति देता है।

तकनीकी संसाधन:

तकनीकी संसाधन वे आधुनिक उपकरण प्रणालियां एवं डिजिटल माध्यम हैं जिनकी सहायता से शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया को अधिक सरल, प्रभावी रोचक एवं व्यापक बनाया जाता है। ये संसाधन शिक्षा को पारंपारिक कक्षा से आगे बढाकर डिजिटल एवं वैश्विक मंच प्रदान करते हैं।

तकनीकी संसाधनों में हार्डवेअर, सॉफ्टवेअर, इंटरनेट एवं डिजिटल प्लॅटफॉर्म, आधुनिक उन्नत तकनीक आदि का समावेश है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समावेशी शिक्षा, स्वअधिगम को प्रोत्साहन, शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन, नवाचार एवं रचनात्मकता आदि शिक्षा में तकनीकी संसाधनों की भूमिका होती है। इस संदर्भ में भारत सरकार ने डिजिटल इंडिया अभियान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, Swayam प्लेटफॉर्म, Diksha पोर्टल, ऑनलाईन हाइब्रिड शिक्षा प्रणाली आदि तकनीकी संसाधनों से संबंधित पहले की गई है।

कंप्यूटर, लैपटॉप, टेबलेट, इंटरनेट, वाई-फाई, नेटवर्क सिस्टम, स्मार्ट फोन, मोबाइल ॲप, शैक्षिक सॉफ्टवेअर प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड, मशीने ऑटोमेशन टूल्स, Ai रोबोटिक्स आदि तकनीकी संसाधनों के प्रमुख उदाहरण हैं जो शैक्षिक कार्यों को आसान, तेज, सटिक और प्रभावी बनाने में उपयोगी सिद्ध होते हैं | शिक्षा, उद्योग, स्वास्थ्य, संचार, प्रशासन हर क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी संसाधनों से ज्ञान तक त्वरित और व्यापक पहुंच बन जाती है | शिक्षा को रोचक और प्रभावी बनाया जा सकता है | दूरस्थ शिक्षा और समावेशिता को बढावा दिया जा सकता है | ऑनलाईन कक्षाएं और डिजिटल अध्ययन सामग्री को विकसित कर ज्ञान की शाखाएं विस्तारित की जा सकती है |

शैक्षिक विकास में संसाधनों से जुडी चुनौतियाँ:

शिक्षा किसी भी समाज और राष्ट्र के समग्र विकास का मूल आधार है | शैक्षिक विकास का अर्थ केवल साक्षरता नहीं बल्की व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक और व्यावसायिक विकास से है | इस विकास में उपयुक्त चर्चित संसाधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | संसाधनों की गुणवत्ता और उचित उपयोग से ही शिक्षा प्रभावी बनती है | किंतु इनके साथ अनेक चुनौतियाँ भी जुडी है जो शैक्षिक विकास को प्रभावित करती है |

शिक्षा के विकास में संसाधनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, लेकिन इन संसाधनों से जुड़ी कई चुनौतियाँ शिक्षा व्यवस्था की प्रगति में बाधा बनती हैं। सबसे बड़ी चुनौती वित्तीय संसाधनों की कमी है। अनेक विद्यालयों

और शैक्षणिक संस्थानों को पर्याप्त धन न मिलने के कारण भवन, पुस्तकालय, प्रयोगशाला और आधुनिक उपकरणों का अभाव रहता है।

दूसरी प्रमुख चुनौती मानव संसाधनों की कमी है। प्रशिक्षित और योग्य शिक्षकों का अभाव, शिक्षकों का असमान वितरण तथा उनके प्रशिक्षण की कमी शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। इसके साथ ही तकनीकी संसाधनों की असमान उपलब्धता भी एक बड़ी समस्या है। शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में कंप्यूटर, इंटरनेट और डिजिटल साधनों की कमी पाई जाती है, जिससे डिजिटल शिक्षा सभी तक समान रूप से नहीं पहुँच पाती।

भौतिक संसाधनों की अपर्याप्तता जैसे कक्षाओं की कमी, फर्नीचर, स्वच्छता सुविधाएँ और सुरक्षित वातावरण का अभाव भी विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। इसके अलावा प्रबंधन और योजना की कमजोरी, संसाधनों का सही उपयोग न होना और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ भी शिक्षा के विकास में बाधक हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि संसाधनों की उपलब्धता के साथ-साथ उनका समान वितरण, उचित प्रबंधन और प्रभावी उपयोग आवश्यक है। इन चुनौतियों का समाधान किए बिना शिक्षा का समग्र और संतुलित विकास संभव नहीं है।

शैक्षिक विकास में संसाधनों से जुडी चुनौतियों के समाधान:

अतः संसाधनों से जुडी चुनातियों का समाधान किए बिना शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार संभव किए बिना शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार संभव नहीं है | संसाधनों का समान वितरण, उचित योजना, प्रभावी क्रियान्वयन और सरकारी नहीं है। निजी सहयोग से इन चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है। संतुलित और समावेशी संसाधन व्यवस्था ही सशक्त शिक्षा प्रणाली की नींव है।

शिक्षा के विकास में संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, लेकिन इनके अभाव या असमान वितरण के कारण कई चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। इन चुनौतियों के प्रभावी समाधान निम्नलिखित हैं-

1. वित्तीय संसाधनों की कमी का समाधान: सरकार को शिक्षा बजट में वृद्धि करनी चाहिए। साथ ही निजी क्षेत्र, CSR, दान और जनसहभागिता के माध्यम से अतिरिक्त वित्तीय संसाधन जुटाए जा सकते हैं।

2. भौतिक संसाधनों की कमी का समाधान: विद्यालयों में भवन, कक्षा, प्रयोगशाला, पुस्तकालय और स्वच्छता सुविधाओं के विकास के लिए विशेष योजनाएँ बनाई जाएँ। ग्रामीण और दूरदराज़ क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे पर विशेष ध्यान दिया जाए।

3. मानव संसाधनों की कमी का समाधान: योग्य शिक्षकों की नियुक्ति, नियमित प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ और डिजिटल शिक्षण कौशल का विकास आवश्यक है। शिक्षकों को प्रोत्साहन और सम्मान देकर उनकी गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है।

4. तकनीकी संसाधनों की असमानता का समाधान: डिजिटल डिवाइड को कम करने के लिए सभी विद्यालयों में इंटरनेट, स्मार्ट कक्षाएँ और ई-लर्निंग सामग्री उपलब्ध कराई जाए। छात्रों को सस्ते या निःशुल्क डिजिटल उपकरण दिए जाएँ।

5. प्रशासनिक एवं प्रबंधन संबंधी समस्याओं का समाधान: शिक्षा प्रणाली में पारदर्शिता, बेहतर योजना, निगरानी और उत्तरदायित्व सुनिश्चित किया जाए। विद्यालय प्रबंधन समितियों की भूमिका को मजबूत किया जाए।

यदि शिक्षा में संसाधनों से जुड़ी चुनौतियों का समुचित और योजनाबद्ध समाधान किया जाए, तो शिक्षा की

गुणवत्ता में सुधार होगा और समग्र शैक्षिक विकास संभव हो सकेगा।

निष्कर्ष:

शिक्षा का विकास संसाधनों की उपलब्धता एवं उनके प्रभावी उपयोग पर निर्भर करता है। मानव, भौतिक, वित्तीय एवं तकनीकी संसाधन शिक्षा प्रणाली की रीढ़ है। भारत जैसे विशाल देश में संसाधनों के बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती।

विकसित देशों की तुलना में विकसनशील देशों में इस संदर्भ में चुनौतियों की मात्रा अधिक होती है। इस दृष्टि से भारत के शैक्षिक विकास में संसाधनों की भूमिका बडी चुनौतिपूर्ण है | यदि संसाधनों का संतुलित, योजनाबध्द एवं समान वितरण किया जाए तो शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम बनेगी बल्कि राष्ट्र के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देगी।

ग्रंथ सूची:

1) शिक्षा के आधार – डॉ.बी.एन.सहाय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण द्वितीय
2) शिक्षा मनोविज्ञान – डॉ.अरुणकुमार सिंह, भारती भवन पटना, संस्करण पंचम
3) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार – डॉ.एस.के.मंगल, टंडन पब्लिकेशन, लखनऊ, संस्करण तृतीय
4) politics – Aristotal – penguin/ classic – edition
5) Meditationes sacrae - francis baken, Everymans library – edition